प्रेम बानी भाग3 पेज 286 ॥ शब्द 6 ॥ निरखो निरखो सखी ऋतु आई वसंत	
हिंदी	संस्कृत
निरखो निरखो सखी ऋतु आई वसंत । खोज करो घर आदि अंत ॥ १ ॥	पश्य पश्य सखी (साक्षी) आगतः वसन्तर्तुः । अन्वेषय गृहस्य आद्यन्तं च ॥ १ ॥
देखो देखो सखी यह जग लबार । धोखा दे रहा मन गँवार ॥ २ ॥	पश्य पश्य सखी (साक्षी) मिथ्या जगदिदम् । प्रपञ्चति मूर्खमनः ॥ २ ॥
खोजो खोजो सखी सतगुरु दयार । करम भरम सब दें निकार ॥ ३ ॥	मार्गय मार्गय सखी (साक्षी) सद्गुरुदयालुम् । सर्वे कर्मभ्रमाः निष्कासयन्ति ॥ ३ ॥
पकड़ो पकड़ो सखी तुम उनकी बाँह । उन बिन रक्षक नहिं जग माहिं ॥ ४ ॥	गृहाण गृहाण सखी (साक्षी) त्वं तेषां भुजाम् । तं विना नास्ति रक्षकः जगति ॥ ४ ॥
धारो धारो सखी तुम उनकी सरन । सुरत शब्द ले भौ तरन ॥ ५ ॥	धारय धारय सखी (साक्षी) त्वं तेषां शरणम् । सुरतशब्दं गृहीत्वा भवसागरात् तर ॥ ५ ॥
धाओ धाओ सखी सुन सुन्न की धुन । छिन में मिट जायँ पाप और पुन्न ॥ ६ ॥	धाव धाव सखी (साक्षी) सुन्नपदस्य ध्वनिं शृणु । नश्यन्ति पापपुण्याश्च क्षणे एव ॥ ६ ॥
चलो चलो सखी सतगुरु की लार । पहुँचो राधास्वामी पद दयार ॥ ७ ॥	गच्छ गच्छ सखी (साक्षी) सद्गुरुणा साकम् । प्राप्नुहि <u>रा</u> <u>धा/धः</u> <u>स्व</u> <u>आ</u> <u>मी</u> दयालूनां पदम् ॥ ७ ॥